4

गलतियों के सबक

अक्षय कुमार दीक्षित*

मेरा किसी काम से मिश्रा जी की कक्षा में जाना हुआ। मिश्रा जी दूसरी कक्षा को पढ़ाते हैं। जैसे ही कमरे में, मैं दाखिल हुआ, मिश्रा जी का ध्यान भंग हो गया। वह बच्चों की कॉपियाँ जाँच रहे थे और चेहरे से लग रहा था कि वह बहुत खिन्न भी हैं। पास ही वह बच्चा खड़ा था जिसकी कॉपी जाँची जा रही थी।

"क्या बात है मिश्रा जी? क्यों परेशान हैं?" मैंने हँसते हुए माहौल को बदलने की कोशिश की। मिश्रा जी का मानो सब्र का बाँध टूट गया। व्यथित होते हुए बोले, "मैंने श्रुतलेख दिया था। अब जाँच कर रहा हूँ। एक भी बच्चे ने दस में से दस शब्द सही नहीं लिखे। इसी बच्चे को देख लो, सिर्फ़ दो शब्द ही सही हैं" उन्होंने उसकी कॉपी मेरी ओर बढ़ा दी। बच्चे के चेहरे पर अपराध बोध और गहरा गया।

मिश्रा जी नियमित रूप से दस शब्द श्रुतलेख के रूप में बोलकर लिखवाते थे फिर उनकी जाँच करते थे और प्रत्येक सही शब्द पर एक अंक दिया करते थे। बच्चों को प्रोत्साहित करने और उनकी लिखाई को दोष रहित बनाने का यह उनका अपना तरीका था। बाद में बच्चे सुधार कार्य करते और प्रत्येक गलत लिखे शब्द को दस-दस बार कॉपी में लिखते। मैंने उस बच्चे की कॉपी पर नज़र डाली।

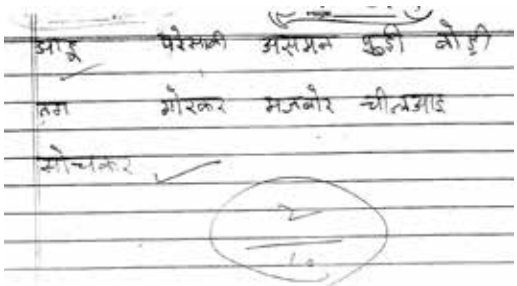

"मिश्रा जी, आप बेकार ही परेशान हो रहे हैं। आपको तो इस बच्चे की कॉपी देखकर खुश होना चाहिए।" मैंने कहा।

"खुश होना चाहिए? इतनी सारी गलतियाँ देखकर खुश होना चाहिए?" उन्होनें थोड़ा नाराज़ होते हुए कहा।

"इस बच्चे ने इस पूरे पृष्ठ पर केवल बारह अक्षर या मात्राएँ 'गलत' लिखी हैं। पर क्या आपने गौर किया, इस बच्चे ने इसी पृष्ठ पर 36 अक्षर और मात्राएँ 'सही' लिखी हैं। अब आप ही बताइए, आपको खुश होना चाहिए या दुखी?" मेरी बार सुनकर मिश्रा जी ने झट से कॉपी मेरे हाथ से ले ली और उलझन भरी

**शिक्षा-सलाहकार*, सी-633 जे.बी.टी.एस. गार्डन, छत्तरपुर एक्सटेंशन नयी दिल्ली - 110074

नज़रों से उस पर लिखे शब्दों को देखने लगे। फिर कुछ पल रुककर बोले, "पर पूरी तरह से ठीक लिखे शब्द तो दो ही हैं न?"

"आप श्रुतलेख बोलते किसलिए हैं मिश्रा जी? पूरी तरह ठीक लिखे शब्दों को देखकर नंबर देने के लिए? बच्चों की गलितयाँ ढूँढने के लिए? या फिर बच्चे कितना कुछ सीख चुके हैं, इसकी पड़ताल करने के लिए?"

"ये सभी कारण हैं दीक्षित जी। पर साथ ही एक कारण और है। बच्चों को जो कुछ नहीं आता है, उसका पता लगाकर उसका अभ्यास करवाने के लिए भी मैं श्रुतलेख बोलता हूँ। मेरा सबसे बड़ा उद्देश्य तो यही है कि बच्चे सबकुछ ठीक-ठीक, बिना गलती किए लिख लें।"

"माफ़ कीजिए मिश्रा जी, बिलकुल ठीक-ठीक लिखने का दावा न तो आप कर सकते हैं, न मैं। देखिए बच्चे की कॉपी में, आपने झाड़ू को भी ठीक मान लिया है। इससे पता चलता है कि आप भी झाड़ू इसी तरह लिखते होंगे। फिर सही किसे कहा जाए और गलत किसे कहा जाए, यह भी कोई सीधा-सादा मुद्दा नहीं है। जो मेरी नज़र से सही है, वह आपकी नज़र में गलत हो सकता है और जो आपकी नज़र से सही है, वह मेरी नज़र में गलत हो सकता है। इस बात को ज़रा बच्चे के नज़रिए से देखिए। आपके नज़रिए से जो गलत है, हो सकता है कि बच्चे के नज़रिए से वह सही हो?" मैंने विनम्रतापूर्वक कहा।

"तो इसका मतलब जो कुछ बच्चे ने लिख दिया, हम उसे सही मान लें? फिर तो हमारी हिंदी भाषा की जो दुर्गति होगी... "

"अरे अरे, आप तो बहुत आगे निकल गए। अरे भाई, मैं तो सिर्फ़ इतना कह रहा हूँ कि जब हम बड़े लोग भी सौ प्रतिशत सही लिखने का दावा नहीं कर सकते, तो बच्चे तो अभी सीखने की प्रक्रिया में हैं, स्वाभाविक रूप से वे अधिक 'त्रुटियाँ' करेंगे, अधिक प्रयोग करेंगे और अपने ही तरीकों से जोड़-तोड़ करके अपना रास्ता खोजेंगे। हमारा काम तो उन्हें इस खोजबीन में मदद करना है।" मैंने अपनी बात को ज़रा धीमे से समझाया।

"आपकी बात ठीक तो है, पर यह हमारे जैसे स्कूलों के बच्चों के साथ नहीं हो सकता। देखिए ज़रा अस्सी बच्चे बैठे हैं क्लास में। हर बच्चे के लिए खोजबीन का रास्ता खोजने बैठूँ तो पूरा साल इसी में निकल जाएगा।" उन्होंने अब व्यवस्था संबंधी रोना शुरू कर दिया।

"रहने दीजिए मिश्रा जी, आपका स्वभाव मैं अच्छी तरह जानता हूँ। जो टीचर रोज़ अस्सी बच्चों को श्रुतलेख बोलकर उनकी कॉपी जाँच सकता है, वह बच्चों की मदद ही करना चाहता है, यह मैं समझता हूँ। आप जैसे अध्यापक के मुँह से ऐसी बातें अटपटी लगती हैं"

यह सुनकर वे झेंप से गए। फिर बोले, "अच्छा बताइए, बच्चों की गलतियाँ कैसे ठीक करवाऊँ?"

"बच्चों की गलतियाँ ठीक करने से ज़्यादा ज़रूरी यह समझना है कि वे गलतियाँ कर भी रहे हैं या नहीं? हो सकता है जो हमारी नज़र में गलती है, वह उनकी नज़र में गलती हो ही नहीं! फिर यह भी देखना होगा कि वह ऐसा क्यों कर रहे हैं। जानबूझकर तो कोई ऐसा नहीं करना चाहेगा! हम इन गलतियों के कारणों को

खोज सकते हैं अगर बच्चों की लिखित रचनाओं या लेखन कार्य को थोड़ा ध्यान से देखें। उदाहरण के लिए, इसी बच्चे के लिखे दस शब्दों पर गौर कीजिए। इस बच्चे ने बोड़ी, गोरकर और मजबोर, तीनों शब्दों में ‘ू’ के बजाए ‘े’ का इस्तेमाल किया है। परंतु ‘सोचकर’ में उसने ो मात्रा का सही इस्तेमाल किया है। इसका मतलब उसे ‘ू’ और ‘े’ ध्वनि का अंतर पता है पर ‘ू’ ध्वनि के चिह्न में उलझन है। आगे देखिए, ‘परेसानी’ में ‘स’ का प्रयोग दर्शाता है कि ‘स’ और ‘श’ के उच्चारण या लेखन में इस बच्चे को उलझन है। ‘घूरकर’ को इसने ‘गोलकर’ लिखा है। इसका मतलब या तो यह शब्द इसे ठीक से सुनाई नहीं दिया या फिर ‘ग’ और ‘घ’ में अंतर करने में इसे दिक्कत है। ‘चिल्लाई’ शब्द को इसने ‘चिलआई’ लिखा है। स्पष्ट है कि बच्चे ने अपने ही तरीके से आपके द्वारा दी गई ज़िम्मेदारी को निभाने का प्रयास किया है। यह बहुत ही प्रारंभिक विश्लेषण है, लेकिन इसी से आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि जिन्हें हम ‘गलती’ कहते हैं, वह वास्तव में यह बताती हैं कि बच्चे के दिमाग में क्या कुछ चल रहा है।”

“पर क्या मेरे जैसे एक आम अध्यापक के पास इतना समय होता है कि वह हर बच्चे की हर ‘गलती’ का इस तरह विश्लेषण कर सके?” मिश्रा जी ने शंका ज़ाहिर की। परंतु उनके चेहरे से स्पष्ट था कि अब वह इस बारे में गंभीरतापूर्वक सोच-विचार कर रहे हैं।

“मिश्रा जी, जब आप बच्चों के लेखन के नमूनों पर गौर करना शुरू करेंगे तो पाएँगे कि कक्षा के सभी बच्चे अलग प्रकार से सोचते और कार्य करते हैं लेकिन इस विभिन्नता में भी कुछ-कुछ एकरूपता है। बस, इसी समानता को जब आप पहचान लेंगे तो आपका काम आसान हो जाएगा।”

“दीक्षित जी, आपकी बातें मुझे अच्छी तो बहुत लग रही हैं, पर जब तक आप कुछ ठोस उदाहरण नहीं देंगे, मुझे शक है कि मैं इन बातों पर अमल कर सकूँगा।” मिश्रा जी की यह फ़रमाइश प्रकट कर रही थी कि वह मेरी बातों से सहमत तो हैं लेकिन उनकी व्यवहारिकता की वह जाँच करना चाहते हैं।

“ठीक है। बच्चों के खाना खाने का समय भी हो गया है। इस बीच आप मेरी कक्षा में चलिए। मैं आपको कुछ ठोस उदाहरण दिखाता हूँ।”

मैं मिश्रा जी को अपनी कक्षा में ले आया और बताया, “देखिए। कल मैंने एक गतिविधि करवाई थी। मैंने बच्चों को एक कहानी सुनाई थी। बच्चों को कहानी बहुत अच्छी लगी। यह उनके चेहरों से पता चल रहा था। कहानी बहुत पुरानी, या कह सकते हैं, पारंपरिक थी। हो सकता है कुछ बच्चों ने पहले सुन भी रखी हो। जो भी हो, मैंने बच्चों के मूड को भाँपकर उन्हें सुझाव दिया कि वह इस कहानी को अपनी-अपनी कॉपी में लिख लें। आप सोच रहे होंगे कि सुनी हुई कहानी को मैं कॉपी पर क्यों लिखवाना चाह रहा था, है न?”

“हाँ, मैं आपसे पूछने ही वाला था।”

“कहानी लिखवाने के अनेक तरीके हो सकते हैं जैसे, कुछ शब्द देकर उनके आधार पर कहानी लिखवाना, स्वतंत्र रूप से कहानी लिखवाना, कहानी को आगे बढ़ाना, या कहानी के पात्र बदल कर कहानी फिर से कहना आदि। मैं अपनी कक्षा में यह सभी क्रियाकलाप करवाता हूँ। पर कल मैंने बच्चों से कहा कि वह सुनी हुई कहानी को अपने शब्दों में लिखें।

बच्चे सुनी हुई कहानी लिख रहे हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि वे एक जैसी बातें या एक ही कहानी लिखेंगे। प्रत्येक बच्चे की कहानी दूसरे से अलग होगी। इसका कारण यह है कि जब बच्चे कहानी सुनते हैं तो हर बच्चे को कहानी की जो बात अपने जीवन या अनुभवों से मेल खाती हुई लगती है, वह उसी को अपने लेखन में अधिक प्रमुखता देता है। यह बात आप इन रचनाओं में देख सकते हैं। फ़िलहाल मैं आपको चार बच्चों की कहानियाँ दिखा रहा हूँ। इसी के आधार पर हम विचार करेंगे कि बच्चे लेखन में कैसी 'गलतियाँ' करते हैं और क्यों करते हैं।"

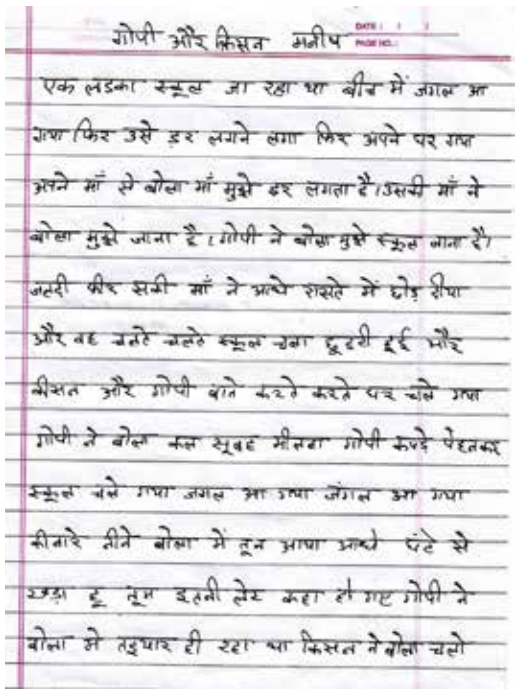

गोपी और किसन मनीष
एक लडका स्कूल जा रहा था बीच में जंगल आ
गया फिर उसे डर लगने लगा फिर अपने घर गया
अपने माँ से बोला माँ मुझे डर लगता है। उसकी माँ ने
बोला मुझे जाना है। गोपी ने बोला मुझे स्कूल जाना है
जल्दी फीर सुबी माँ ने अपने रास्ते में छोड़ दीया
और वह चलते चलते स्कूल गया छुट्टी हुई और
कीसन और गोपी बाते करते करते घर चले गया
गोपी ने बोला कल सुबह मीलना गोपी कपड़े पेहनकर
स्कूल चले गया जंगल आ गया जंगल आ गया
कीनारे तीने बोला में तुम आधा आधे घंटे से
रुका हू तुम इतनी देर कहा रो गए गोपी ने
बोला मे तइयार ही रहा था किसन ने बोला चलो

कारणों की पड़ताल

"आप अगर इन चारों कहानियों को ध्यान से देखें तो पाएँगे कि एक ही कहानी प्रत्येक बच्चे ने अपने ही अनूठे तरीके से लिखी है। इसी प्रकार कक्षा के अन्य बच्चों की कहानियाँ भी बिलकुल अलग और अनूठी हैं। साथ ही प्रत्येक बच्चे के लिखने का अंदाज़, सोचने का तरीका और 'गलतियाँ' भी अलग-अलग हैं। लेकिन फिर भी, अनेक बातें ऐसी हैं जो हम एक से अधिक नमूनों में खोज सकते हैं। बच्चों के लिए शुद्धता इतनी महत्वपूर्ण नहीं होती जितना अधिक महत्वपूर्ण होता है अपनी बात को लिखकर अभिव्यक्त करना। दूसरी ओर, बड़ों की दृष्टि में बिलकुल शुद्ध रूप से लिखी गई सामग्री ही अधिक महत्त्व पाती है। इसी 'वर्गभेद' या वैचारिक भिन्नता का खामियाज़ा बच्चों को कई प्रकार से उठाना पड़ता है।

बच्चों के लिए अपनी बात को लिखना इतना अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है कि वे किसी शब्द का सही लिखित रूप जानते हुए भी कई बार उसकी अनदेखी कर जाते हैं। ठीक उसी तरह जिस तरह हम अपने घर पर या मित्रों से बातचीत करते हुए शुद्ध उच्चारण से समझौता कर बैठते हैं। याद कीजिए, क्या हम "मैं जा रहा हूँ" को "मैं जारा हूँ" या "मैं जाराऊँ" नहीं बोल पड़ते? इसी प्रकार नहीं को नई, कहाँ को काँ, भाभी को भाबी बोलकर भी हम अपनी बात को समझ और समझा लेते हैं। इसी तरह की छूट बच्चे अपने लेखन में भी लेते हैं। वह भूल जाते हैं कि जब 'बड़े' उनके कार्य की जाँच करने बैठेंगे तो यही 'छूट' उनके लिए मुसीबत बन सकती है। बच्चे इसी छूट के कारण एक ही पृष्ठ पर एक ही शब्द को अलग-अलग तरह से लिख देते हैं। अगर आप इन शब्दों पर उनका ध्यान आकर्षित करवाएँ तो वे तुरंत अपनी 'छूट' को पकड़ लेंगे और उसे दुरुस्त भी कर लेंगे।

बच्चे किसी शब्द का सही रूप जानते हुए भी उसे 'गलत' किस प्रकार लिख देते हैं, इस छूट का उदाहरण आप कहानी 1 में पा सकते हैं।

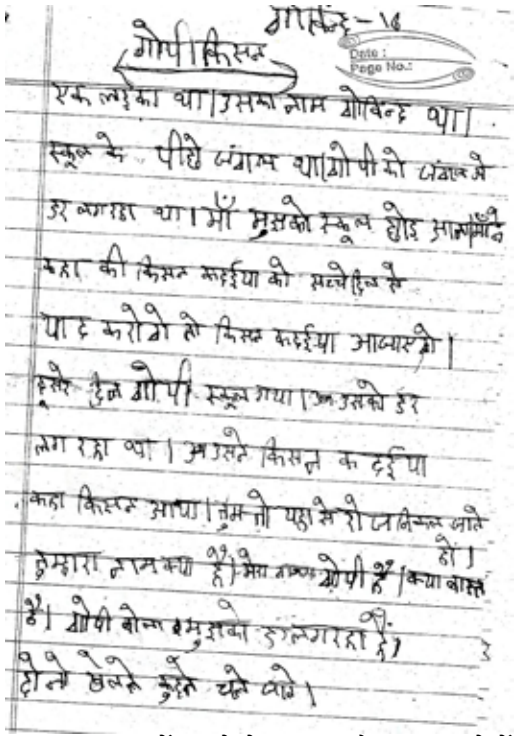

कहानी 1 में बच्चे ने जंगल और जगल, दोनों रूपों का इस्तेमाल किया है। इसी कहानी में किसन और कीसन, फिर और फीर, दोनों तरीकों से लिखा गया है। कहानी 4 में बच्चे ने माँ और मा, दोनों रूपों का इस्तेमाल किया है।

इसी बात से जुड़ी है एक और बात! कई बच्चे लिखते समय अपनी बात अधूरी छोड़ देते हैं और कई बार घटनाओं या विचारों का क्रम आगे-पीछे हो जाता है। उदाहरण के लिए, कहानी 3 में बच्चा सीधे कहानी के मुख्य भाग यानी स्कूल में होने वाली दावत पर पहुँच जाता है। शायद कहानी का यही भाग

उसे महत्वपूर्ण या सबसे प्रभावपूर्ण लगा हो! कई बार कहानी के प्रवाह में बच्चा इतना ज़्यादा खो सा जाता है कि कहानी अधूरे वाक्यों में आगे बढ़ती है। बच्चे के मस्तिष्क में कहानी के चित्र इतनी जल्दी-जल्दी आगे बढ़ते हैं कि उसकी कलम उस गति का मुकाबला नहीं कर पाती और वह कहानी की 'गैर-ज़रूरी' बातें छोड़ता चला जाता है। आप कहानी 1 में भी इस बात का अनुभव कर सकते हैं।

बच्चे के लेखन पर उसके परिवेश और घर की भाषा-शैली का सबसे गहरा असर पड़ता है। जिस प्रकार का उच्चारण और शैली वह दूसरों से सुन रहा है, उस शैली और लहजे का प्रभाव उसके बोलने और उसके लेखन पर भी पड़ जाता है। बच्चे के उच्चारण के तरीके की पहचान हम उसके लेखन में स्पष्ट रूप से कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, कहानी 1 में "माँ ने बोला" "तुम इतनी लेट कहा हो गए"

कहानी 2 में "माँ मुझको स्कूल छोड़ आना"

कहानी 3 में "गुरुजी दूध माँगाई" "रासते" "चाई" (चाहिए)

इसी तरह 'कहाँ' को 'कहा', 'मैं' को 'में', हैं को है लिखने का भी यही कारण हो सकता है!बच्चों के लेखन पर हिंदी भाषा की प्रकृति से जुड़ी कुछ विशेषताओं का भी असर देखने को मिलता है। हिंदी भाषा में कभी-कभी शब्दों के लिखित रूप और उसके उच्चारण में स्पष्ट रूप से बहुत अधिक अंतर होता है। ऐसे में बच्चे शब्द के उच्चरित रूप को सटीकता से लिखने की कोशिश करते हैं। यह बच्चों की नज़र में तो सही होता है पर बड़ों के लिए यह अशुद्ध लेखन कहा जाता है। उदाहरण के लिए, कहानी 1 में 'पेहन' शब्द को देखिए।

हिंदी की प्रकृति से जुड़ी कुछ अन्य विशेषताएँ बच्चों के लेखन में अशुद्धि' बनकर प्रकट हो जाती हैं। उदाहरण के लिए, 'श' और 'ष' जैसी ध्वनियाँ जिनके उच्चारण में अंतर बच्चे तो क्या, बड़े भी दुर्लभ ही कर पाते हैं। इसी तरह ग – घ, ड – ङ, र – ऋ जैसी अनेक ध्वनियाँ हैं, जिनमें बच्चों के नज़रिए से देखें तो कुछ ख़ास अंतर होता ही नहीं है, इसलिए वे इनके लिखित रूप के प्रयोग में भी अधिक सतर्कता की ज़रूरत नहीं समझते। शायद इसीलिए कहानी 1 में बच्चे ने डर को ड़र लिख दिया है। कहानी 4 में बच्चे ने डर को ढर लिख दिया है!

लेखन में 'अशुद्धि' का एक अन्य कारण है हिंदी वर्णमाला के कुछ वर्णों की जटिल आकृति। ऐसे वर्णों की सही-सही आकृति बनाना छोटे बच्चों के लिए एक पहेली जैसा होता है। उदाहरण के लिए, क्ष, ज्ञ, श्र, ऋ, द्द, द्य आदि। बच्चे इनको पहचान लें, पढ़ भी लें, तो भी इनकी सटीक आकृति बनाने की महारत हासिल करने में उन्हें थोडा ज़्यादा समय लग जाता है। लेकिन बड़ों के पास शायद इतना समय नहीं होता, इसलिए उनका धैर्य जवाब देने लग जाता है।

कुछ वर्णों की मिलती-जुलती आकृति भी लेखन संबंधी 'गलतियों' का रूप ले लेती है। हिंदी वर्णमाला के लगभग सभी वर्णों में कुछ न कुछ एकरूपता है, लेकिन जहाँ यह एकरूपता अपने चरम पर होती है, वहाँ उलझन भी अपने चरम पर पहुँच जाती है। ऐसे ही कुछ वर्ण हैं –

ब – व इ – ई उ – ऊ ओ – औ घ – ध श – स

प – ष ढ – ढ़ म – भ य – थ ड – ड़ अ – आ – अं आदि।

यह समानता मात्रा चिह्नों में तो और भी ज़्यादा होती है। इसीलिए कहानी 3 में बच्चे ने 'कृष्ण' को 'कुष्ण' लिख दिया है।

इन सब कारणों के मिलेजुले असर के कारण कई बच्चे स्वरों के ह्रस्व और दीर्घ रूप के लेखन में अनुमान से ही काम चला लेते हैं। इस बात के कई प्रमाण आपको इन सभी कहानियों में मिल जाएँगे। उदाहरण के लिए, कहानी 1 में बच्चे ने इन शब्दों का प्रयोग किया है –

स्कूल – तूम – हू – मुझे – सूबह – हूई

दीया – गोपी – फीर – उसकी – बीच – इतनी – छुट्टी

आप इन उदाहरणों में देख सकते हैं कि बच्चे को इन ध्वनियों के अंतर का पता तो है, लेकिन एकाधिक कारणों से उसने इनके प्रयोग में 'छूट' ले ली है।

अब हम एक बहुत ही रोचक कारण पर गौर करते हैं। इस कारण की झलक बच्चों में ही नहीं, बल्कि बड़ों में भी दिखाई देती है। पहले ज़रा अपने बारे में बताइए। आपको गाने का शौक ज़रूर होगा। भले ही आप सिर्फ़ अकेले में थोड़ा गुनगुना भर लेते हों। अब ज़रा याद कीजिए, जब किसी गाने की कोई पंक्ति या शब्द आप भूल जाते हैं, तो क्या करते हैं? गाना वहीं बंद कर देते हैं? याद करने की कोशिश करते हैं? किसी से पूछते हैं? नहीं! आप भूले हुए शब्द या पंक्ति के बजाए अपने हिसाब से कुछ जोड़-तोड़ करके गाने की पंक्ति को पूरा कर लेते हैं। गाने को पूरा करना ही अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, न कि उसे सटीकता से गाना। सही कहा न मैंने?

अब बच्चों के लेखन की ओर लौटते हैं। कई बार बच्चों को ऐसा शब्द लिखने की ज़रूरत पड़ती है, जिसे उन्होंने सुना तो होता है, वे उसका इस्तेमाल भी करते हैं, पर उसके लिखित रूप को देखने का या उसपर ध्यान देने का उन्हें मौक़ा ही नहीं मिला। कभी-कभी उस शब्द की छवि उनके मस्तिष्क से ओझल हो जाति है। ऐसी स्थितियों में बच्चे भी इसी तरह के तर्कपूर्ण जोड़-तोड़ का सहारा लेते हैं। उदाहरण के लिए, कहानी 1 में बच्चे ने तैयार को तईयार, किसन कन्हैया को किसन कहईया लिख दिया है। इस प्रकार के जोड़तोड़ बच्चों की सूझबूझ, कल्पनाशीलता और भाषा की गहरी समझ को ही प्रकट करते हैं। इसी सूझबूझ और समझ का सहारा लेकर बच्चे कई बार भाषा संबंधी अपने ही अनोखे नियम बना लेते हैं जो बड़ों के लिए तो अशुद्ध होते हैं, पर बच्चों के लिए बिलकुल तर्कपूर्ण होते हैं। उदाहरण के लिए, कहानी 3 में देखिए –

कृष्ण ने कहा "न मेरे से बात कर रहे हो"।

इस वाक्य को हम ध्यान से देखें तो पाएँगे कि बच्चा लिखना चाहता है - कृष्ण ने कहा, "मुझसे बात क्यों नहीं कर रहे हो?"

अगर हम इस पूरे पृष्ठ पर ध्यान दें तो स्पष्ट हो जाएगा कि बच्चा जानता है कि नहीं के लिए न का प्रयोग किया जा सकता है। इसी पृष्ठ पर उसने न का बहुत सुंदर प्रयोग किया है-

मम्मी बोली – न गाय, न पैसे हैं।

बच्चे ने नहीं का प्रयोग भी भली-भाँति किया है – गोपी बोला – नहीं।

परंतु इस सब जानकारी का सामान्यीकरण करके बच्चे ने न का इस तरह प्रयोग कर दिया कि बड़े जब उसे पढ़ने बैठेंगे तो शायद पूरे वाक्य को ही अर्थहीन मानकर काट देंगे!

नियमों या जानकारी के सामान्यीकरण का एक और रोचक उदाहरण हमें कहानी 1 और 4 में दिखाई देता है, जहाँ बच्चे जानते हैं कि किसी वाक्य की समाप्ति पर पूर्ण विराम का प्रयोग किया जाता है। दोनों बच्चों ने कई स्थानों पर पूर्ण विराम का सटीक इस्तेमाल किया है। लेकिन इस जानकारी को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने अपना ही एक नियम बना लिया है कि कॉपी की पंक्ति समाप्त होने पर भी पूर्ण विराम लगा देने पर कोई हर्ज़ नहीं है। है न मज़ेदार!"

"मिश्रा जी मानो सम्मोहन से जागो!"

मैंने बड़ी अधीरता से कहा –

मिश्रा जी अपनी बात तर्कपूर्ण तरीके से कहते हुए बोले "मज़ेदार तो है, पर क्या परीक्षा भी इतनी ही मज़ेदार होगी? मेरा मतलब, परीक्षा में तो हमें एक-एक शब्द पर ध्यान देना होता है, उसी के आधार पर हम बच्चे की क्षमता का आकलन कर पाते हैं। क्या परीक्षा में इन गलतियों..माफ़ कीजिए दीक्षित जी, अब मैं भी इन गलतियों को 'छूट' कहना ही पसंद करूँगा। हाँ, तो मैं कह रहा था, परीक्षा में भी क्या हम इन 'छूटों' पर ध्यान न दें? फिर होनहार और पिछड़े विद्यार्थी में क्या भेद रह जाएगा?"

"बच्चों को होनहार, पिछड़ा या औसत जैसे दर्जों में बाँटने का चलन कितना वाज़िब है, कभी विचार किया है आपने मिश्रा जी? और जहाँ तक परीक्षा की बात है, ज़रा मुझे बताइए, परीक्षा बच्चों के लिए होती है या बच्चे परीक्षा के लिए?" मैंने अपनी बात मिश्रा जी को समझाने की कोशिश की।

"मानता हूँ कि परीक्षा ही बच्चों के लिए होती है, बच्चे ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं, परीक्षा नहीं। लेकिन परीक्षा से ही तो बच्चों का आकलन संभव हो पाता है। एक बच्चा परीक्षा में बिलकुल ठीक-ठीक पत्र लिखता है, दूसरा बच्चा न तो पत्र के प्रारूप का ध्यान रखता है, न वर्तनी का। ऐसे में क्या आप दोनों को बराबर नंबर दोगे?" मिश्रा जी ने तथ्यपरक तर्क दिया।

"इस बात का जवाब देने से पहले मैं आपको एक प्रार्थना पत्र दिखता हूँ। बताइए, यह पत्र देखकर इस बच्चे के बारे में आपको क्या कुछ पता चला! मैंने अपनी बात प्रमाणपूर्वक प्रस्तुत करते हुए कहा"मिश्रा जी ने प्रार्थनापत्र पर एक नज़र डाली और बेफ़िक्र अंदाज़ से कहने लगे, "बड़ी सीधी-सी बात है। आपने बच्चों को छुट्टी लेने के लिए प्रार्थना पत्र लिखना सिखाया होगा। बच्चों से कहा होगा कि उसे याद कर लें। फिर बच्चों का टेस्ट लिया होगा। उसी टेस्ट का नमूना आपने मुझे दिखाया है। इसे देखकर लगता है कि बच्चे ने अभी ठीक से याद नहीं किया है। अगर परीक्षा में यह पत्र आ गया तो उसे बड़ी दिक्कत हो सकती है। उसे अभी से सँभल जाना चाहिए। क्यों, ठीक कहा न मैंने?" उन्होंने जवाबी सवाल दागा।

"अच्छा, मान लीजिए परीक्षा में छुट्टी के लिए प्रार्थना पत्र लिखने के बजाय किसी बिलकुल नए विषय पर प्रार्थना पत्र लिखने के लिए कहा जाए, तो क्या यह बच्चा लिख सकेगा?" मैंने पूछा।

मिश्रा जी सोच में पड़ गए।

"आपकी चुप्पी का कारण मैं समझता हूँ मिश्रा जी। आप सोच रहे हैं कि यह बच्चा शायद किसी नए

विषय पर, पत्र नहीं लिख सकेगा। ज़्यादातर स्कूलों में बच्चों की हालत ऐसी ही हो जाती है। जो कुछ उन्हें याद करवा दिया जाता है, उसके अतिरिक्त किसी अन्य उत्तर या रचना को वे नहीं लिख पाते। ब्लैक बोर्ड या पुस्तक में छपे उत्तर को रटकर परीक्षा में सही-सही उगल देने से शायद उन्हें अच्छे अंक या ग्रेड मिल भी जाते हों। लेकिन अगर परीक्षा में वह प्रश्न थोड़े फेरबदल के साथ आ जाए, तो उनके 'हाथों के तोते उड़ जाते हैं।' इतना ही नहीं, जो प्रश्न बच्चे ने रटा है, वही परीक्षा में आ भी जाए, तो भी कोई गारंटी नहीं है कि बच्चा सबकुछ ठीक से उगल देगा। अगर उत्तर लिखते-लिखते वह कुछ भूल जाए, फिर तो वह सारा समय उसी शब्द को याद करने में बिता देगा, जो टीचर ने याद करवाया या रटवाया था। उसमें इतना साहस या समझ ही नहीं होती कि वह उस शब्द के बजाए किसी अन्य शब्द से भी अपनी बात को पूरा कर सकता है।

परीक्षा की बात छोड़िए, अपने जीवन में वह रटे हुए ज्ञान का उपयोग किस सीमा तक कर सकेगा, इस बारे में तो कभी विचार ही नहीं किया जाता शायद। आप ही सोचिए, कितने लोगों को आप जानते हैं, जो एक फॉर्म तक ठीक से भर पाते हैं? उन सभी ने अपने स्कूली जीवन में शायद हर वर्ष छुट्टी के लिए प्रार्थना पत्र याद किया होगा और शायद परीक्षा में बिलकुल सही-सही लिखा भी होगा। क्या यह सही-सही लिखा गया पत्र उन्हें असल ज़िंदगी में कुछ काम आया?"

मैंने अपनी बात मिश्रा जी को समझाने की कोशिश की।

"लेकिन बात तो इस पत्र की हो रही थी न, जो आपने मुझे दिखाया है। क्या यह बच्चा भी.....?" मिश्रा जी ने झेंपते हुए कहा?"

मैंने कहा, "अब मैं आपको इस पत्र के बारे में बताता हूँ। यह प्रार्थनापत्र इस बच्चे ने स्वयं बिना किसी अन्य व्यक्ति की सहायता के लिखा है, जब इसे सचमुच गाँव जाना था। इसमें लिखे कारण भी असली हैं और बच्चे का जो अपनापन इसमें झलक रहा है, वह भी सच्चा है। क्या आपने पत्र की अंतिम पंक्ति पर ध्यान दिया - मेरे आने का इंतज़ार करें।"

मिश्रा जी बोले, "सच? विश्वास नहीं होता कि बिना किसी की सहायता के कोई बच्चा ऐसा पत्र लिख सकता है। क्या आपने बच्चों को प्रार्थना पत्र लिखना कभी नहीं सिखाया था?"

मैंने जवाब में कहा, "शायद एक बार बातों-बातों में इतना ज़रूर बताया था कि ज़रूरत पड़ने पर अगर प्रार्थना पत्र लिखना पड़े तो नाम आदि कहाँ लिखना बेहतर रहता है। बाकी सबकुछ इसी बच्चे ने बिना किसी मदद के लिखा है। बिना किसी की मदद के यह बच्चा इसलिए अपने मन की बातें लिख सका क्योंकि उसे पता था कि अगर कुछ 'गलती' हो भी गई तो भी उसे अपमानित नहीं किया जाएगा। मेरे विचार से यह बच्चा ऐसे लोगों से बेहतर है जो रटकर अशुद्धि रहित निबंध या उत्तर तो लिख सकते हैं लेकिन वास्तविक जीवन में ज़रूरत पड़ने पर एक शब्द तक नहीं लिख सकते।"

मिश्रा जी बोले, "तो क्या हम वर्तनी संबंधी समस्याओं को बिलकुल नज़रअंदाज़ कर दें?"

मैंने बड़ी विनम्रता से कहा, "मेरे विचार से उचित यह रहेगा कि हम अपनी प्राथमिकताएँ निर्धारित कर लें। सही-सही लिखने के आग्रह से ज़्यादा ज़रूरी यह है कि बच्चा लिखना तो प्रारंभ करे। लिखना भी ऐसा

हो जो उसकी भावनाओं, खुशियों, इच्छाओं और कल्पनाओं से जुड़ा हो। वह लेखन से ख़ुशी प्राप्त करने लगे। जब बच्चा आत्मविश्वासपूर्वक अपने मन की बातें आपको लिखकर बताने लगे, तब आप बाकी बातों पर भी गौर कर सकते हैं।"

मिश्रा जी बोले – "तो आप बच्चों की लेखन संबंधी दिक्कतों को दूर करने के लिए क्या करते हैं?"

मैंने कहा, "मैं सबसे पहले तो यह देखता हूँ कि बच्चे अगर कोई 'गलती' कर रहे हैं तो उसका कारण क्या है। फिर उसी कारण के अनुसार मैं अपनी योजना बनाता हूँ। मैं बच्चों को ऐसे खेल करवाता हूँ कि उनका मज़े-मज़े में अभ्यास भी हो जाता है और उनके लेखन में सुधार भी हो जाता है। इन खेलों का मुख्य मकसद होता है कि बच्चे शब्दों के लिखित रूप पर ध्यान दें, उनकी छवि बच्चों के मस्तिष्क पर अंकित हो जाए। एक बार कोई शब्द बच्चों के स्मृति-पटल पर अंकित हो जाए, फिर उसे लिखने में किसी भी प्रकार की त्रुटि की संभावना लगभग शून्य हो जाती है।

एक खेल जो मैं ज़्यादातर करवाता हूँ, वह है शब्द खोजना। इसमें बच्चों को किसी विशेष मापदंड के आधार पर शब्द खोजने होते हैं। मापदंड कभी-कभी मैं दे देता हूँ, कभी-कभी बच्चे खुद चुन लेते हैं। उदाहरण के लिए, तीन अक्षर वाले शब्द, आ की मात्रा वाले शब्द आदि। इस खेल में कक्षा के अनुसार स्तरों को आसान या जटिल बनाया जा सकता है। शब्द खोजने के लिए *शब्दकोश, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पाठ्य पुस्तक* आदि का प्रयोग किया जा सकता है। मैं बच्चों की टोलियों में बाँट देता हूँ, जो टोली जितने ज़्यादा शब्द खोज लेती है, उसे विजेता घोषित कर दिया जाता है।

इसी खेल का एक रूप है – शब्दों में समानता या अंतर खोजना। इस खेल में बच्चों को कुछ शब्द दे दिए जाते हैं। इन शब्दों का चुनाव मैं भी कर लेता हूँ और टोलियाँ भी एक दूसरे के लिए कर लेती हैं। बच्चों को दिए गए शब्दों में अपने मापदंडों से या मेरे दिए गए मापदंड से, अंतर या समानता खोजनी होती है। उदाहरण के लिए, कुसुम, मकान, पका आदि शब्दों में समानता यह है कि तीनों में क अक्षर आया है। शब्दों के एक समूह में एक से ज़्यादा समानताएँ या अंतर भी खोजे जा सकते हैं। इसी खेल का एक रूप है – शब्दों के समूह में से अलग शब्द को पहचानना।

कभी-कभी मैं महसूस करता हूँ कि कक्षा के ज़्यादातर बच्चे किसी एक शब्द को सही नहीं लिख पा रहे हैं। तब मैं कोई ख़ास अभ्यास उस शब्द विशेष के लिए बना लेता हूँ। उदाहरण के लिए, एक बार मैंने देखा कि ज़्यादातर बच्चे क्योंकि शब्द को लिखने में कठिनाई महसूस कर रहे हैं। मैंने बच्चों के साथ एक खेल खेला। मैंने कहा कि मैं कुछ अधूरे वाक्य बोलूँगा, तुम्हें उन्हें पूरा करना है। मैंने जो वाक्य बोले, वे कुछ इस तरह के थे – आज हम धूप में बैठे हैं क्योंकि, मैं रोज़ स्कूल में आता हूँ क्योंकि, मेरे पिता रोज़ काम पर जाते हैं क्योंकि, मुझे स्कूल पसंद है क्योंकि आदि। पहला वाक्य बोलने के बाद मैंने उन्हें बता दिया कि क्योंकि कैसे लिखते हैं। अब बच्चे उसे बार-बार लिख रहे हैं लेकिन उन्हें पता भी नहीं चल रहा कि वे उसका अभ्यास कर रहे हैं। उनका ध्यान तो इस रोचक कार्य को करने में हैं।

मैंने अपनी कक्षा में शब्दों की दीवार भी बना रखी है। हर रोज़ जो नए शब्द बच्चे सीखते हैं, वे उस

दीवार पर लिख दिए जाते हैं ताकि सभी बच्चे उन शब्दों को देख सकें। इससे बच्चे एक-दूसरे को ही काफ़ी कुछ सिखा देते हैं।"

"शब्द-निर्माण के खेल भी इस काम में काफ़ी सहायता करते हैं। जैसे किसी अक्षर, मात्रा या शब्द से नए शब्द बनाना। उदाहरण के लिए, बज शब्द से नए शब्द बनाना। मैं बच्चों से कह देता हूँ कि वे इन दोनों अक्षरों में कोई भी अक्षर या मात्रा जोड़ सकते हैं नए शब्द बनाने के लिए। इस गतिविधि का कठिनाई स्तर भी मैं कक्षा के अनुसार निर्धारित कर देता हूँ। उदाहरण के लिए, पहली कक्षा के बच्चों को मैं निरर्थक शब्द बनाने की छूट भी दे देता हूँ। वे इसी शब्द से बजग जैसा शब्द भी बना सकते हैं। बाद में उनके सामने सार्थक शब्द ही बनाने की चुनौती दे देता हूँ।

फ़्लेश कार्ड भी शब्दों की बनावट की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करने में काफ़ी काम आते हैं। मैं रोज़ एक या दो नए शब्द फ़्लेश कार्डों पर लिखकर उनका कई तरह से इस्तेमाल करता हूँ जैसे खेलों में, उनको दिखाकर उनके बारे में बात करने के लिए आदि। कभी-कभी मैं समान ध्वनि वाले शब्दों का प्रयोग भी फ़्लेश कार्डों के साथ कर लेता हूँ। उदाहरण के लिए, जाल, बाल, डाल आदि। इनसे बच्चों को नए शब्द बनाने और उनके लिखित रूप को पहचानने का मौक़ा मिलता है। बड़ी कक्षाओं में, मैं समान ध्वनि वाले शब्दों को रिक्त स्थान पूर्ति की गतिविधि में प्रयोग करता हूँ। उदाहरण के लिए–

बाज़ार में ..... मिलता है। (आम/दाम)

कभी-कभी मैं नए शब्दों के अर्थों का अनुमान लगाने का खेल भी करवाता हूँ। इस खेल में बच्चों की टोलियों को बारी-बारी से कुछ शब्द दे दिए जाते हैं। मैं कोशिश करता हूँ कि ऐसे शब्द दूँ जिनके अर्थ उन्हें पहले से पता न हों। अब बच्चों को अपनी अपनी टोली में मिलकर उस शब्द के अर्थ का अनुमान लगाना है। जिन-जिन टोलियों का अनुमान लगभग सही होगा, उन्हें दस अंक मिल जाएँगे। उदाहरण के लिए, कसैला या भयभीत शब्दों का अर्थ। शब्दों को मैं स्तर के अनुसार ही चुनता हूँ।

इन सब खेलों और गतिविधियों के अनेक लाभ हैं लेकिन सबसे बड़ा लाभ यह है कि बच्चों को शब्दों से दोस्ती और जान-पहचान करने का मौक़ा मिलता है। अगर हम चाहते हैं कि कोई व्यक्ति लिखने में गलती न करे तो उसका एक ही उपाय है। और वह उपाय है शब्दों से दोस्ती।" मैंने मिश्रा जी को अपनी बातें प्रमाणपूर्वक समझा दीं, जिसमें मुझे पूर्णत: सफ़लता भी मिली मिश्रा जी अब बच्चों की गलतियाँ देखकर कभी नहीं झल्लाएँगे परिणामत: बच्चे खुशी-खुशी भाषा में दक्ष भी हो जाएँगे।

❑❑❑